

## यात्रा और पर्यटन : भूगोल के मौलिक तत्व

पर्यटन में यात्रा शामिल होती है। लेकिन सभी यात्राएँ पर्यटन नहीं होती हैं। एक व्यक्ति विभिन्न कारणों से यात्रा करता है, उनमें से पर्यटन एक है। विभिन्न स्थानों के महत्व एवं इसकी प्राकृतिक सुन्दरता के बारे में जानकारी दे करके अनेकों यात्रियों को पर्यटक बनने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। इसीलिए वहाँ के भौगोलिक पहलुओं का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। यह इन गंतव्य स्थानों में पर्यटकों की यात्रा में वृद्धि की संभावनाओं को बढ़ाता है। यदि यात्री को स्थानों के आकर्षण के बारे में उचित जानकारी दी जाए तो वे पर्यटकों के रूप में बदल जाते हैं। आमतौर पर यात्रा और पर्यटन दोनों शब्द एक दूसरे के स्थान पर और समानार्थक शब्द के रूप में प्रयोग किया जाता है। लेकिन पर्यटन शब्द का एक बड़ा दृष्टिकोण है। इसमें यात्रा से बड़ा आशय और धारणा शामिल होती है। यात्रा का अभिप्राय किसी भी उद्देश्य से लिए एक स्थान से दूसरे स्थान का सफर है। पर्यटन का अभिप्राय फुरसत में मनोरंजन, आनन्द, पुनर्युवन अथवा जीवन के व्यस्त कार्यक्रमों से मुक्त होकर विविध गतिविधियों में शामिल होना है। इस पाठ में हम यात्रा और पर्यटन भूगोल के मौलिक तत्व के बारे में पढ़ेंगे।



### उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप :

- यात्रा और पर्यटन में भूगोल के महत्व का वर्णन कर सकेंगे;
- अक्षांश और देशान्तर रेखाओं की मदद से किसी स्थान को नक्शे पर दिखा सकेंगे;
- विभिन्न देशान्तरों पर दो स्थलों के बीच समय अंतराल की गणना कर सकेंगे;
- अंतरराष्ट्रीय समय रेखा को पार करने के प्रभाव को घड़ियों के समय के साथ किए जाने वाले बदलाव को समझा सकेंगे;
- किसी भी स्थान के मानक समय की गणना करने के लिए चरणों का पालन कर सकेंगे; और
- विभिन्न चार्टों में दी गई जानकारी की प्रस्तुति को समझ सकेंगे।

## 4.1 यात्रा और पर्यटन की वृद्धि में भूगोल का महत्व

पृथ्वी के सतह पर हरेक प्रकार की घटनाओं अथवा स्थितियों की मौजूदगी को भूगोल में वर्णन किया जाता है। यह किसी खास समय का हो सकता है अथवा कालानुक्रमिक हो सकता है। अतः भूगोल मानचित्रों, आरेखों, तस्वीरों के जरिए पृथ्वी की सतह को चित्रित करता है। यह लिखित वर्णनों के अतिरिक्त दृश्य माध्यम होता है। दूसरी तरफ पर्यटन में परिवहन, दूरी तय करना, उद्गम व गंतव्य स्थानों के बीच समय अंतराल, रुकना और खाने की व्यवस्था, स्थानीय स्तर पर परिवहन के साधन, स्थल और जगह के विभिन्न आयामों को सम्मिलित किया जाता है। वर्तमान मौसमी जानकारी के साथ-साथ यात्रियों के रूझान को भौगोलिक विश्लेषण की सहायता से आसानी से बताया जा सकता है।

यात्रा और पर्यटन में भूगोल बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इनमें से कुछ तरीके इस प्रकार हैं:

यह हमें सहायता करता है:

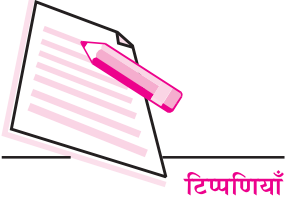
- एक विशिष्ट क्षेत्र का नक्शे पर पता लगाने में,
- उद्गम और गंतव्य स्थानों के बीच भौगोलिक समय-अंतराल का पता लगाने में,
- वैश्विक परिप्रेक्ष्य में घड़ी का समय निर्धारित करने में,
- नक्शे और चार्ट के माध्यम से तथ्यात्मक आंकड़ों के प्रदर्शन में,
- विभिन्न प्रकार के नक्शों को समझने में,
- समझ के साथ नक्शों को पढ़ने में,
- विभिन्न प्रकार की तालिका को समझने में,
- अन्य प्रकार के उपयोगी नक्शे और पर्यटन से संबंधित तालिका को पढ़ने में।

## 4.2 विश्व/नक्शे पर स्थान

हम सभी जानते हैं कि हमारी पृथ्वी एक त्रि-आयामी गोले का प्रतिरूप है। हमारी पृथ्वी लगभग गोले के आकार की है और सौर मंडल की एक सदस्य है। जब हम नक्शा तैयार करते हैं तो पूरी पृथ्वी को या इसके किसी एक भाग को दिखाते हैं। पृथ्वी की सतह वक्र है। एक समतल कागज पर वक्र सतह को दिखाना आसान नहीं है। इसीलिए इसे दिखाने के लिए हम भौगोलिक निर्देशांकों की सहायता लेते हैं। किसी भी स्थान को निर्देशित करने के लिए हम अक्षांश और देशांतर द्वारा दर्शाते हैं। इन दोनों निर्देशांकों की सहायता ने किसी भी बिन्दु को हम शुद्धता से दिखाते हैं। ये ग्राफ पेपर की तरह है जिस पर हम 'एक्स' और 'वाई' निर्देशांको को मान कर किसी भी मान को दर्शाते हैं।



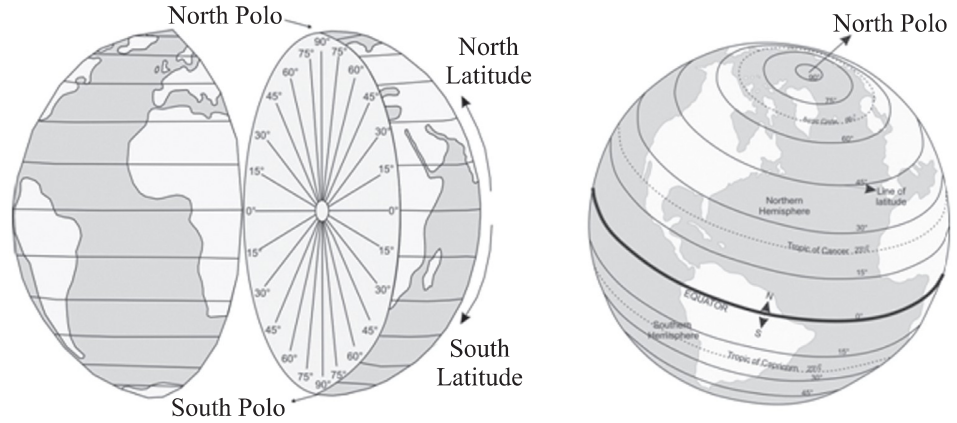
टिप्पणियाँ



### अक्षांश

किसी भी स्थान का अक्षांश वह कोणीय दूरी है जो पृथ्वी के केन्द्र पर भूमध्यरेखीय तल से उत्तर या दक्षिण दिशा में मापी जाती है (चित्र 4.1)। अक्षांश की मुख्य विशेषताएँ हैं:

- यह उत्तरी गोलार्ध में 0° भूमध्य रेखा से लेकर 90° उत्तरी ध्रुव एवं दक्षिणी गोलार्ध में 0° भूमध्य रेखा से 90° दक्षिणी ध्रुव तक फैला है।
- पूर्व से पश्चिम तक जाने वाली सभी अक्षांश रेखाएँ पृथ्वी पर काल्पनिक लकीरें हैं जो भूमध्यरेखा के समानान्तर चलती हैं।
- सभी अक्षांश रेखाएँ पूर्ण वृत्त होती हैं।
- चूंकि वे एक दूसरे के समानान्तर होती हैं अतः उनको समानान्तर रेखाएँ भी कहा जाता है।
- जैसे-जैसे इन समानान्तर रेखाओं का मान ध्रुव की तरफ बढ़ता है, उनकी परिधि कम होती जाती है।
- पृथ्वी के उत्तरी और दक्षिणी दो ध्रुवों के मध्य से भूमध्य रेखा गुजरती है।
- भूमध्य रेखा एकमात्र अक्षांश है, जिसका तल पृथ्वी के केन्द्र से गुजरता है। इसलिए इसे वृहत् वृत्त के रूप में जाना जाता है।
- यदि आप भूमध्य रेखा के साथ-साथ यात्रा करते हैं, तो यह भूमध्य रेखा पर पाये जाने वाले स्थानों के बीच सबसे कम दूरी होगी।
- अन्य अक्षांशों के साथ-साथ यात्रा सबसे छोटी दूरी नहीं है।



चित्र 4.1: अक्षांश

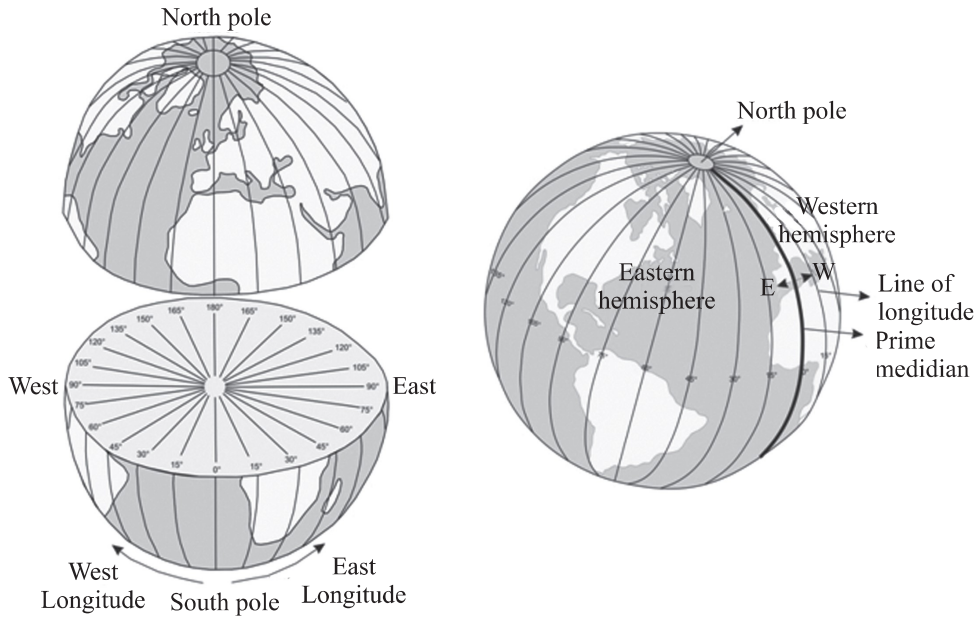
### देशांतर

किसी भी स्थान का देशांतर वह कोणीय दूरी है जो पृथ्वी की धुरी के साथ-साथ प्रधान मध्याह्न रेखीय तल तथा उस स्थान के समांतर्रीय तल के बीच बनती है (चित्र 4.2)। देशांतर की मुख्य विशेषताएँ हैं:

- यह एक काल्पनिक रेखा है जो उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक चलती है।
- लंदन के पास ग्रीनविच से गुजरती रेखा प्रधान मध्याह्न रेखा है जिसका मान  $0^\circ$  है।
- प्रधान मध्याह्न रेखा से पूर्व या पश्चिम की ओर दूरी अंशों में होती है।
- प्रधान मध्याह्न रेखा के पश्चिम में  $0^\circ$  से  $180^\circ$  पश्चिमी देशांतर के रूप में गिने जाते हैं।
- प्रधान मध्याह्न रेखा के पूर्व में  $0^\circ$  से  $180^\circ$  पूर्वी देशांतर के रूप में गिने जाते हैं।
- देशांतर रेखाएँ समानान्तर नहीं होती हैं; वे बड़ी अर्धवृत्त हैं जो ध्रुव से ध्रुव तक पहुँचती हैं।
- प्रधान मध्याह्न रेखा पृथ्वी को दो गोलार्द्धों में विभाजित करती है। पूर्व की ओर का भाग पूर्वीय गोलार्द्ध है और पश्चिम की ओर का भाग पश्चिमी गोलार्द्ध है।
- देशांतर की सभी रेखाएँ अक्षांतर की रेखाओं को  $90^\circ$  (समकोण) पर काटती हैं।
- ध्रुव की ओर देशान्तर के अन्तर की जगह कम होती जाती है।
- देशांतर की सभी रेखाएँ एक ओर से देखने पर अर्द्धवृत्त दिखती हैं। परन्तु दूसरी ओर को एक साथ जोड़ कर देखने पर वे पूर्ण वृत्त हो जाती हैं।



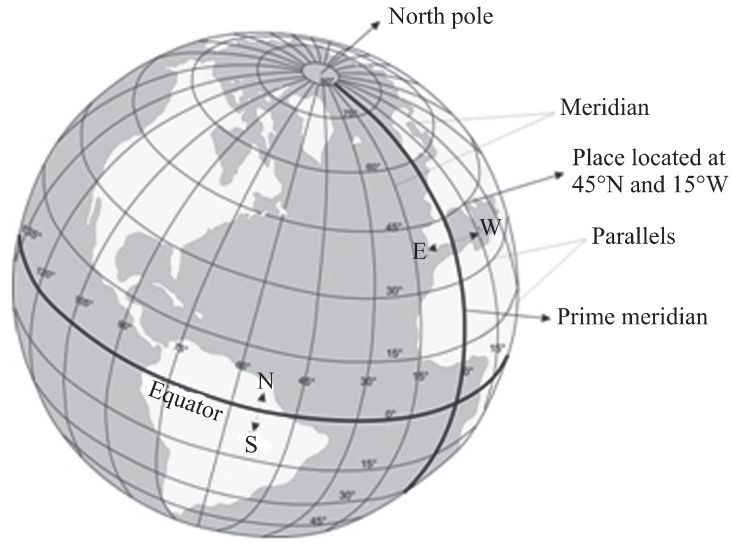
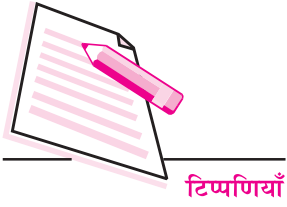
टिप्पणियाँ



चित्र 4.2: देशांतर

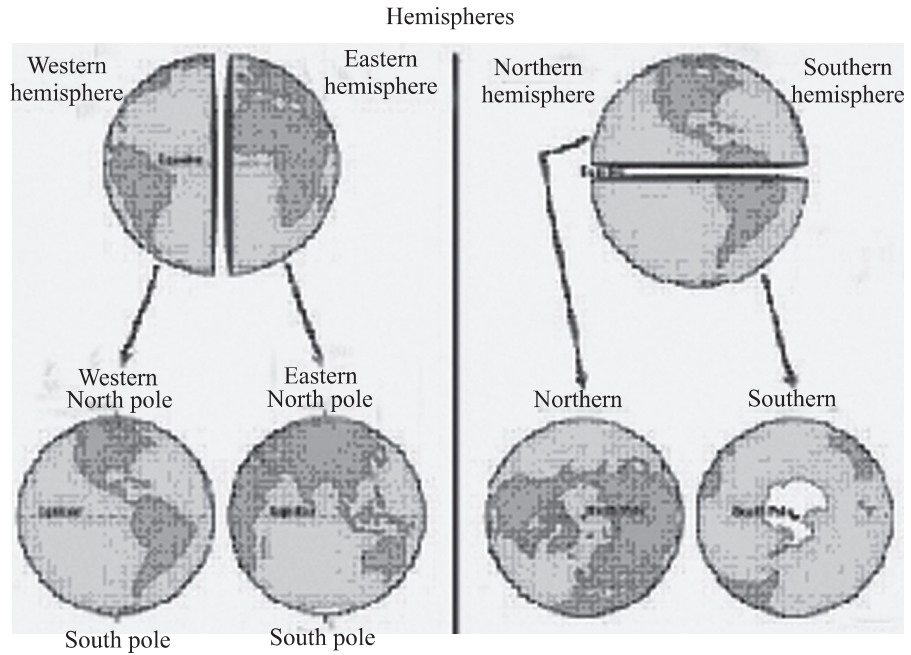
### अक्षांश, देशांतर और गोलार्द्ध

चित्र संख्या 4.3 में अक्षांश और देशांतर दोनों रेखाएँ दिखती हैं।



चित्र 4.3: गोलाद्ध

जैसा कि पहले भी उल्लेख किया है, भूमध्य रेखा दोनों ध्रुवों - उत्तरी एवं दक्षिणी- के बीच से गुजरती है। भूमध्यरेखा से उत्तरी ध्रुव तक के क्षेत्र को उत्तरी गोलाद्ध कहा जाता है। इसी तरह से, भूमध्यरेखा से दक्षिणी ध्रुव तक के क्षेत्र को दक्षिणी गोलाद्ध कहा जाता है। प्रधान मध्याह्न रेखा 0° और 180° एक दूसरे के विपरीत हैं। दोनों को एक साथ मिलाने से पूर्ण वृत्त बन जाता है। 0° से 180° तक पूर्व में पूर्वी गोलाद्ध है और 0° से 180° तक पश्चिम में पश्चिमी गोलाद्ध है (चित्र 4.4)।



चित्र 4.4: गोलाद्ध का विभाजन



### पाठगत प्रश्न 4.1

#### (क) रिक्त स्थानों को भरिए

1. .... एकमात्र अक्षांश है जिसका तल पृथ्वी के केन्द्र से गुजरता है।
2. भूमध्य रेखा पृथ्वी को दो ..... में बांटती है।
3.  $0^\circ$  देशांतर लंदन के पास ..... से गुजरती है।
4. भारत ..... गोलाद्ध में स्थित है।

#### (ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए:

1. यात्रा और पर्यटन में भूगोल की भूमिका की चर्चा कीजिए।
2. अक्षांश और देशांतर का क्या अभिप्राय है?
3. यात्रियों को अक्षांश और देशांतर की मूल जानकारी क्यों होनी चाहिए?

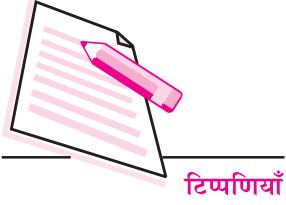
### 4.3 भौगोलिक समय अंतराल

हम सब जानते हैं कि पृथ्वी अपने अक्ष पर 24 घंटे में एक बार घूम जाती है। इस तरह पृथ्वी का घूमना एक पूरा चक्र है।  $360^\circ$  का पूरा चक्कर 24 घंटे में पूरा होता है। यदि  $360^\circ$  कोण को 24 घंटे से विभाजित किया जाए तो एक घंटे में  $15^\circ$  घूम जाती है। एक घंटा 60 मिनट के बराबर होता है जिसका मतलब है कि पृथ्वी चार मिनट में  $1^\circ$  घूमती है। यह सूर्य के संदर्भ में पृथ्वी सतह की स्थिति होती है। किसी स्थान का सही समय सूर्य की स्थिति से निर्धारित किया जाता है। जब सूर्य ठीक सिर के ऊपर होता है तो इसे दोपहर माना जाता है और इसी प्रकार समय का निर्धारण आगे के 24 घंटा में होता है। इस प्रकार हमारी घड़ी के समय को इसके अनुरूप तय करना उस स्थान विशेष का समय होता है। इसे स्थानीय समय कहते हैं।

किसी भी देश के देशांतर का फैलाव छोटा/कम नहीं होता इसीलिए कोई देश किसी भी स्थान के स्थानीय समय को देश का मानक समय नहीं मानता। एक ही देश में विभिन्न समयों से बचने के लिए उस देश का मानक समय का निर्धारण किया जाता है। इसके लिए उस देश के मध्य से गुजरने वाली देशांतर रेखा के आधार पर किया जाता है। उदाहरण के तौर पर भारत के देशांतर का फैलाव  $68^\circ$  से  $97^\circ$  पूर्व देशांतर है। भारत के लिए मुख्य अक्ष  $82^\circ 30'$  पूर्वी देशांतर है (जो नैनी इलाहाबाद) है। अगर 4 मिनट से गुना किया जाए तो यह 330 मिनट होगा जो 5 घंटे 30 मिनट के बराबर है।  $82^\circ 30'$  मिनट पूर्वी देशांतर प्रधान मध्याह्न रेखा ( $0^\circ$ ) से लिया गया है जो ग्रीनविच, लंदन के पास से होकर गुजरती है। इसलिए भारतीय समय ग्रीनविच समय से 5 घंटा 30 मिनट आगे रहता है क्योंकि यह ग्रीनविच से पूर्व में है। पूर्वी छोर और पश्चिमी छोर के स्थानीय

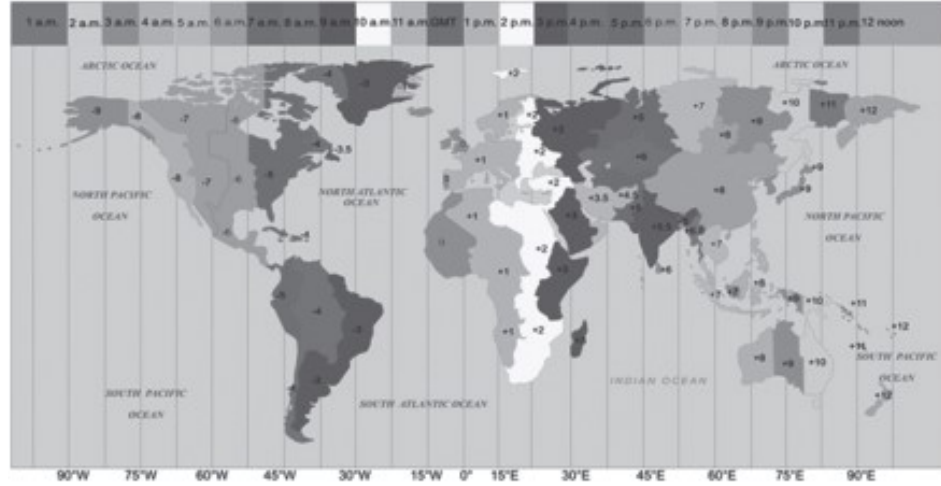


टिप्पणियाँ



टिप्पणियाँ

समय में लगभग दो घंटे का अंतर है। जब अरूणाचल प्रदेश के लोग नाश्ता करके ऑफिस के लिए निकलते हैं तब गुजरात के लोग सोकर उठते हैं। फिर भी पूरे देश का समय हर स्थान पर एक समान होता है। यह विभिन्न समय की समस्या से बचने के लिए किया जाता है।



चित्र 4.5: समय अंतराल

कुछ देशों के देशांतरीय विस्तार ज्यादा होता है। ऐसे देशों में बहुत से टाइम जोन होते हैं। आस्ट्रेलिया में तीन टाइम जोन, यूएसए में चार, कनाडा में छः, रूस में नौ टाइम जोन हैं। विश्व के स्वीकृत टाइम जोन को चित्र 4.5 में दर्शाया गया है। किसी भी अंतरराष्ट्रीय यात्री को किसी भी देश में भ्रमण के लिए उस देश के मानक समय के अनुसार अपनी घड़ी को मिलना पड़ता है। अतः समय की जानकारी बहुत जरूरी है क्योंकि यह अपने देश और उस देश की स्थिति की जानकारी पाने में मददगार होता है। यह समय-अंतराल को समझने में भी मददगार होता है। मानव शरीर को जलवायु के साथ-साथ देशांतरों के बदलाव के कारण जो समय अंतराल हुआ है उसके अनुसार अभ्यस्त होना होता है। यह निद्राविकार को भी निर्धारित करता है क्योंकि पर्यटक को उसके अनुसार अपनी जैविक घड़ी को समायोजित करना पड़ता है। यह समस्या मुख्यतः पूरब-पश्चिम की ओर प्रस्थान करने में होती है।

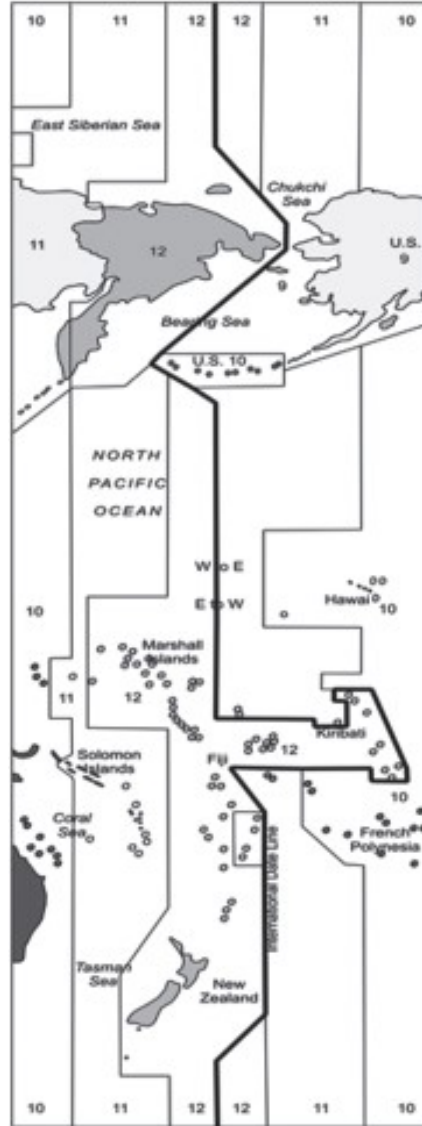
#### 4.4 अंतरराष्ट्रीय समय रेखा

अंतरराष्ट्रीय समय रेखा पृथ्वी के सतह पर एक काल्पनिक रेखा है जो उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक चलती है और एक कलैण्डर दिन को एक तरफ से दूसरी तरफ अलग करती है। चित्र 4.6 में दिखाया है कि अंतरराष्ट्रीय समय रेखा 180° देशांतर के साथ-साथ चलती है जो लगभग प्रशांत महासागर के मध्य से नीचे होती है। एक राष्ट्र से अंतरराष्ट्रीय समय रेखा के गुजरने से रोकने के लिए इसे रूस के दूर पूर्वी भाग एवं प्रशांत महासागर के अनेक समूहों के दूर से निकाली गई है। ये विभिन्न परिवर्तन (पूर्वी अथवा पश्चिमी) सामान्यतया एक देश के विभिन्न भागों को अंतरराष्ट्रीय समय रेखा के एक ओर रखने के लिए किया गया है। अंतरराष्ट्रीय समय रेखा को पार कर यदि

कोई पर्यटक पूर्व की ओर आता है, तो एक दिन अथवा 24 घंटे उसका अपनी घड़ी में पीछे करना पड़ता है। अंतरराष्ट्रीय रेखा के पूर्व से पश्चिम की ओर जाने वाले पर्यटकों के घड़ी में 24 घंटे अथवा एक कलैण्डर दिन जुड़ जाता है। अंतरराष्ट्रीय तिथि रेखा दिन और समय की सही गणना हेतु आवश्यक है।



टिप्पणियाँ

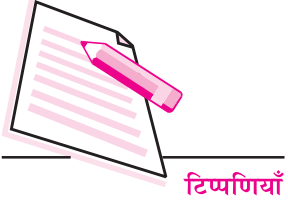


चित्र 4.6: अंतरराष्ट्रीय तिथि रेखा

#### 4.5 ग्लोब पर समय निर्धारण

जैसा ऊपर कहा गया है, पृथ्वी को एक देशांतर से दूसरे देशांतर की दूरी तय करने में चार मिनट का समय लगता है। यदि आपके सामने ग्लोब को रखा जाए और आप ग्लोब को देख रहे हैं तो ज्ञात होगा कि पृथ्वी अपने धुरी पर घड़ी की विपरीत दिशा में घुमती है। सूर्य को पूर्व





दिशा में स्थिर माना जाता है। सूर्य के संदर्भ में पृथ्वी के धरातल में परिवर्तन उसकी परिक्रमा के कारण होता है। ग्लोब का पश्चिमी भाग पूर्व की ओर सूर्य की ओर घुमता है। इसीलिए पूर्व के नजदीक का भाग सूर्य के सामने पहले आता है और पश्चिमी भाग बाद में आता है। इसी कारण पूर्व के भाग का समय पहले आता है और पश्चिम के हिस्से का बाद में आता है। पुनः पूर्व व पश्चिम का निर्धारण देशांतरों के मान पर होता है। पूर्व के देशों/स्थानों का समय आगे होता है। समय का विस्तारण देश/स्थान के पूर्व-पश्चिम के विस्तार से होता है। हमारे देश का मानक समय एवं मुख्य देशांतर के समय से निर्धारित होता है। इसे भारतीय मानक समय (आई एस टी) कह जाता है। यह ग्रीनविच से  $82^{\circ} 30'$  पूर्व में स्थित है। अतः ग्रीनविच समय की तुलना में भारत का समय 5 घंटे और 30 मिनट आगे है।

#### 4.5.1 समय की गणना करने का तरीका

निम्नलिखित तरीके अपनाए जाने चाहिए :

- जिन दो स्थानों के बीच समय का निर्धारण करना हो, उन दोनों स्थानों का देशांतर पता कीजिए।
- दोनों स्थानों के देशांतरों के बीच अंतर की गणना डिग्री में कीजिए।
- अगर दोनों स्थान एक ही गोलार्द्ध (पूर्व या पश्चिम) में है तो बड़े देशांतर मान में से छोटे देशांतर मान को घटा कर अंतर निर्धारित कीजिए।
- अगर दोनों स्थान भिन्न गोलार्द्ध में है तो अन्तर जानने के लिए देशांतर मानों को जोड़ दीजिए।
- प्राप्त अन्तर को चार से गुणा करें, क्योंकि पृथ्वी को एक डिग्री देशांतर को पार करने में चार मिनट का समय लगता है।
- इस प्रकार प्राप्त संख्या मिनट में होगी।
- इन आंकड़ों को घंटों में बदलने के लिए 60 से भाग करें क्योंकि एक घंटा 60 मिनट के बराबर होता है।
- समय में जो अन्तर आप पाएँगे, वह अन्तर दो स्थानों के बीच का होगा।
- पश्चिम की तुलना में पूर्व का समय ज्ञात करने के लिए पश्चिम के समय में जोड़ दिया जाता है, क्योंकि पश्चिम के समय की तुलना में पूर्व दिशा का समय अधिक होता है।
- पूर्व की तुलना में पश्चिम का समय ज्ञात करने के लिए पूर्व के समय में से परिकलित समय को घटा दिया जाता है क्योंकि पूर्व की तुलना में पश्चिम का समय कम होता है।

हम कुछ उदाहरणों का अध्ययन करें: स्थान 'A'  $45^{\circ}$  पूर्व देशांतर पर है जहाँ सुबह के 8 बजे है। दूसरी स्थान 'B'  $120^{\circ}$  पूर्व देशांतर पर है। स्थान 'B' का स्थानीय समय क्या होगा?

**हल:** दोनों स्थानों के देशांतरों का अंतर  $(120^{\circ} - 45^{\circ}) = 75^{\circ}$  है।

$75 \times 4$  मिनट = 300 मिनट

300 मिनट ÷ 60 मिनट = 5 घंटे

'A' (पश्चिम) के संदर्भ में 'B' (पूर्व), का समय ज्ञात करना है। अतः 'B' का समय 'A' से 5 घंटे ज्यादा होगा। इसलिए 'B' का समय (8+5 = 13 घंटे) 1 अपराह्न होगा।

अन्य उदाहरण लेते हैं: 'P' स्थान का देशांतर 45° पूर्व देशांतर पर है जहाँ का समय के सुबह 8 बजे हैं। दूसरा स्थान 'Q' 120° पश्चिमी देशांतर पर है तो 'Q' का स्थानीय समय क्या होगा?

हल: देशान्तरों का अन्तर (120° + 45°) = 165° है।

165 × 4 मिनट = 660 मिनट

660 मिनट ÷ 60 मिनट = 11 घंटे

'P' पूर्व में है और 'Q' पश्चिम में है। इसलिए 'Q' स्थान का स्थानीय समय 'P' की तुलना में 11 घंटे कम होगा। अतः 'Q' का समय (8 पूर्वाह्न - 11 घंटे होगा)

24 (पिछली तारीख) + 8 घंटे = 32 घंटे - 11 घंटे = 21 घंटे अर्थात् = 9 बजे अपराह्न

यदि एक फरवरी 2013 को 'P' स्थान पर सुबह 8 बजे होंगे तो 'Q' स्थान पर 31 जनवरी 2013 की 9 बजे अपराह्न का समय होगा। ('P' स्थान की तारीख की तुलना में पिछली तारीख)।



#### क्रियाकलाप 4.1

दूर विदेश में रहने वाले अपने दोस्त या रिश्तेदार को फोन करें। वहाँ के स्थानीय समय का पता लगाए। उसके और अपने स्थान के समय अन्तर की गणना करें। दोनों शहरों के मध्य देशांतर अंतर और समय अंतर की गणना करें, और तुलना करें।



#### पाठगत प्रश्न 4.2

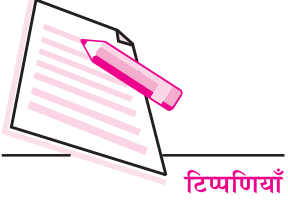
1. अंतरराष्ट्रीय समय रेखा को परिभाषित करें।
2. इलाहाबाद और लंदन के मध्य समय में कितना अंतर है?
3. अंतरराष्ट्रीय समय रेखा को पार करने का क्या प्रभाव पड़ता है?

#### 4.6 मानचित्रों और चार्टों द्वारा संप्रेषण

भूगोल में मानचित्रों और चार्टों के माध्यम से सूचना को प्रदर्शित करने की विधि इस्तेमाल होती है। वे बहुत से तथ्यों को स्पष्ट तौर पर दिखाने में बहुत सहायक होते हैं और सूचनाओं को अधिक बोधगम्य बनाते हैं। यदि एक व्यक्ति ध्यानपूर्वक किसी विशेष स्थान पर जाता है तो देखे हुए



टिप्पणियाँ



तथ्यों/दृश्यों को भलीभांति बाद में भी व्यक्त कर सकता है। लेकिन यदि तथ्यों/दृश्यों को मानचित्र के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है तो यह मानचित्र उन व्यक्तियों के लिए भी बोधगम्य होता है जो वहाँ कभी भी नहीं गये होते हैं।

मानचित्र का बहुत महत्व है क्योंकि :

- मानचित्र बड़े क्षेत्र को भी बोधगम्य बना देता है। इसमें उस क्षेत्र के विविध तत्वों का आलेखन किया जाता है,
- बड़ा क्षेत्र भी मानचित्र के माध्यम से बोधगम्य हो जाता है,
- मानचित्रों के माध्यम से विवरण के स्थानिक विविधता और प्रतिरूप को आसानी से समझा जा सकता है परन्तु लिखकर समझना उतना आसान नहीं होता है,
- मानचित्र सुव्यवस्थित होता है और स्थानिक सूचना के संग्रहण हेतु उपयुक्त होता है और
- मानचित्र शब्दों से अधिक स्पष्ट और उपयुक्त होते हैं।

#### 4.6.1 मानचित्रों के प्रकार

उपयोग व सूचना देने के आधार पर मानचित्रों के अनेक प्रकार होते हैं, लेकिन सुविधा के लिए उन्हें दो प्रमुख श्रेणियों में बांटा जा सकता है :

- (i) सामान्य संदर्भ मानचित्र और
- (ii) विशिष्ट अथवा विषयक मानचित्र

#### 4.6.2 सामान्य संदर्भ मानचित्र

एक सामान्य संदर्भ मानचित्र भू-सतह के किसी भी इकाई जैसे विश्व, महाद्वीपों, देशों, जिलों, नगरों, नदियों, पहाड़ों, पठारों, मैदानों, सागरों इत्यादि की साधारण जानकारी देता है। इस प्रकार के मानचित्र सामान्यतया किताबों अथवा एटलसों में उपलब्ध होते हैं जिनका उपयोग अक्सर छात्र करते हैं। अतः एटलस विभिन्न प्रकार के मानचित्रों का संकलन होता है जो संबंधित स्थान के वांछित पहलुओं के बारे में सामान्य जानकारी देता है।

#### 4.6.3 विशेष अथवा विषयक मानचित्र

विशेष अथवा विषयक मानचित्र में विषयक सूचनाएँ जैसे जलवायु, वनस्पति, वर्षा, तापमान, फसलों का वितरण, खनिज, उद्योग, सड़क, रेल मार्ग, हवाई मार्ग, पवन का प्रवाह और दिशा, चक्रवात इत्यादि दर्शाता है। इन मानचित्रों को व्यक्ति की अपनी विशिष्ट जरूरतों के आधार पर उप-विभागों में पुनः विभक्त किया जा सकता है। कुछ महत्वपूर्ण मानचित्रों की चर्चा नीचे की गयी है:

**राजनैतिक मानचित्र:** राजनैतिक मानचित्र पर किसी भी क्षेत्र विशेष जैसे महाद्वीप/देश अथवा राजनैतिक प्रशासन की कोई इकाई दिखाई जाती है। एक राजनैतिक इकाई से दूसरी में अन्तर स्पष्ट

करने के लिए अनेक रंगों का प्रयोग किया जाता है, लेकिन इन रंगों का किसी राजनैतिक इकाई से कोई विशेष महत्व नहीं होता है। आप भारत का कोई राजनैतिक मानचित्र लीजिए अथवा एटलस में कोई राजनैतिक मानचित्र देखिए। इसमें अंतरराष्ट्रीय, राज्य, तटीय सीमाएँ एवं नदियाँ, झीलों, समुद्रों, महत्वपूर्ण सड़कों, रेल मार्गों, राज्य की राजधानियाँ, महत्वपूर्ण शहरों एवं बंदरगाहों के साथ-साथ प्रमुख औद्योगिक और वाणिज्यिक केंद्रों को भी देख पाते हैं। इस प्रकार के मानचित्र पर्यटकों को पर्यटन स्थानों और उनकी स्थिति के बारे में सूचनाएँ देती हैं। इसमें एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए विभिन्न प्रकार के परिवहनों के प्रकारों तथा अनुमानित दूरी के बारे में जान पाते हैं। यह विभिन्न देशों में जाने वाले पर्यटकों एवं व्यक्तियों को यात्रा करने में सहयोग प्रदान करता है।



टिप्पणियाँ

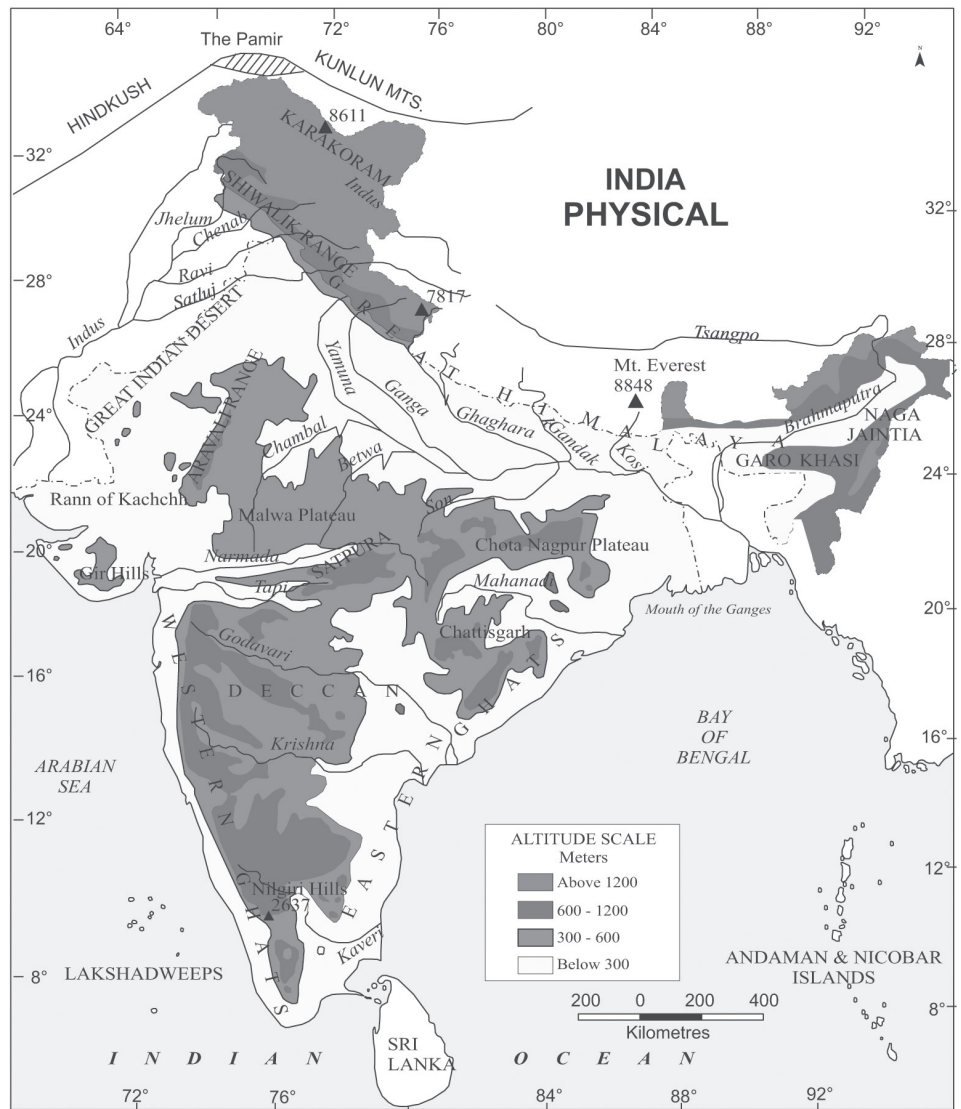


चित्र 4.7: भारत का राजनैतिक मानचित्र



टिप्पणियाँ

**भौतिक मानचित्र :** भौतिक मानचित्र किसी इलाके के भौतिक विशेषताओं/ऊँचाई को दर्शाता है। इन मानचित्रों पर अनेक प्रकार के रंगों का प्रयोग किया जाता है। रंग छायाित रूप में होते हैं। सामान्यतया गहरे रंग अधिक ऊँचाई को और हल्के रंग कम ऊँचे भाग को दिखाते हैं। विभिन्न प्रकार के ऊँचाई धारण करने वाली आकृतियों जैसे पर्वत श्रृंखलाएँ, पहाड़ियाँ, गर्म व ठंडे मरूस्थलों, पठारों अथवा मैदानों को दिखाया जाता है। इसके अलावा नदियों, झरनों, झीलों, वन क्षेत्र, दलदल, जलक्रांत इलाका इत्यादि भी दिखाए जाते हैं (चित्र 4.8)। इस प्रकार के मानचित्र से पर्यटकों को इच्छुक स्थानों में जाने वाले स्थानों के भौतिक विशेषताओं की जानकारी मिलती है। तापमान पर ऊँचाई के प्रभाव को समझते हुए वे वहाँ जाने हेतु अपने आप को तैयार कर पाते हैं। जलवायु के दृष्टिकोण से पर्वतीय भागों की तुलना में मैदानी भाग पूर्णता भिन्न होते हैं। दोनों भागों में पर्यटन की योजना भिन्न ऋतु में की जाती है। इसीलिए पर्यटकों को भौतिक मानचित्र की जानकारी, उसका अध्ययन एवं समझ बहुत ही आवश्यक है।



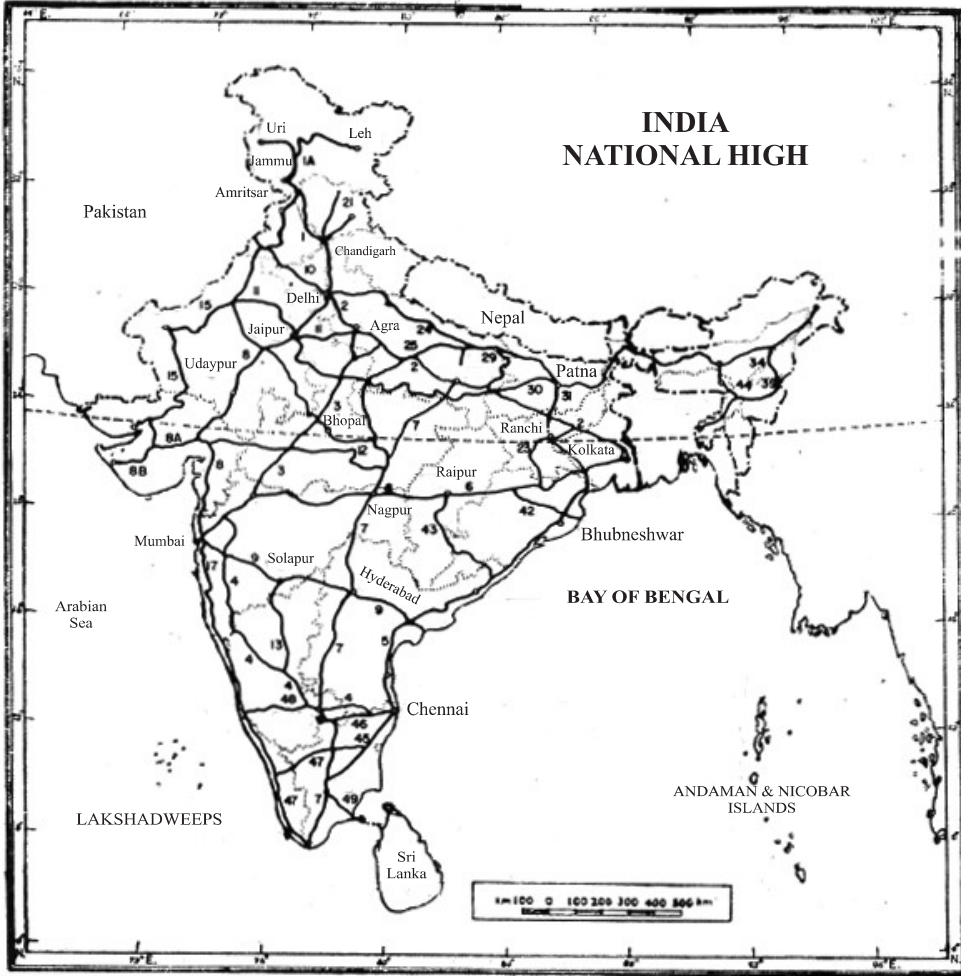
चित्र 4.8: भारत का भौतिक मानचित्र

**सड़क मानचित्र:** सड़क मानचित्र किसी विशिष्ट क्षेत्र में विभिन्न मौसमों में वाहन चलाने योग्य सड़कों की सूचना के साथ सड़कों की जानकारी देता है। इस मानचित्र पर पेट्रोल पंपों की उपलब्धता, रहने व खाने-पीने की सुविधा एवं सार्वजनिक सहायताओं की सूचना होती है। राष्ट्रीय राजमार्ग, राज्य राजमार्ग, जिला राजमार्ग एवं ग्रामीण सड़कों को विभिन्न तरीके से दर्शाया जाता है। इनमें से राष्ट्रीय राजमार्ग और राज्य राजमार्ग बहुत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे सामान्य रूप से लोगों एवं वस्तुओं और विशेषकर पर्यटकों के आवागमन को सुगम बनाते हैं।

सड़कें देशी पर्यटकों के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे अपने विभिन्न गंतव्य स्थानों के लिए सड़क से यात्रा करते हैं। अच्छी सड़कें उपयोगकर्ता को अच्छी सुविधाएँ एवं सेवाएँ प्रदान करती हैं। पर्यटक उनके द्वारा यात्रा की जाने वाली दूरी को जानने में भी इच्छुक रहते हैं। इसके लिए दूरी संबंधी तालिका (चित्र 4.9) समय की योजना एवं यात्रा का निर्णय लेने के लिए अधिक महत्वपूर्ण होती है।



टिप्पणियाँ



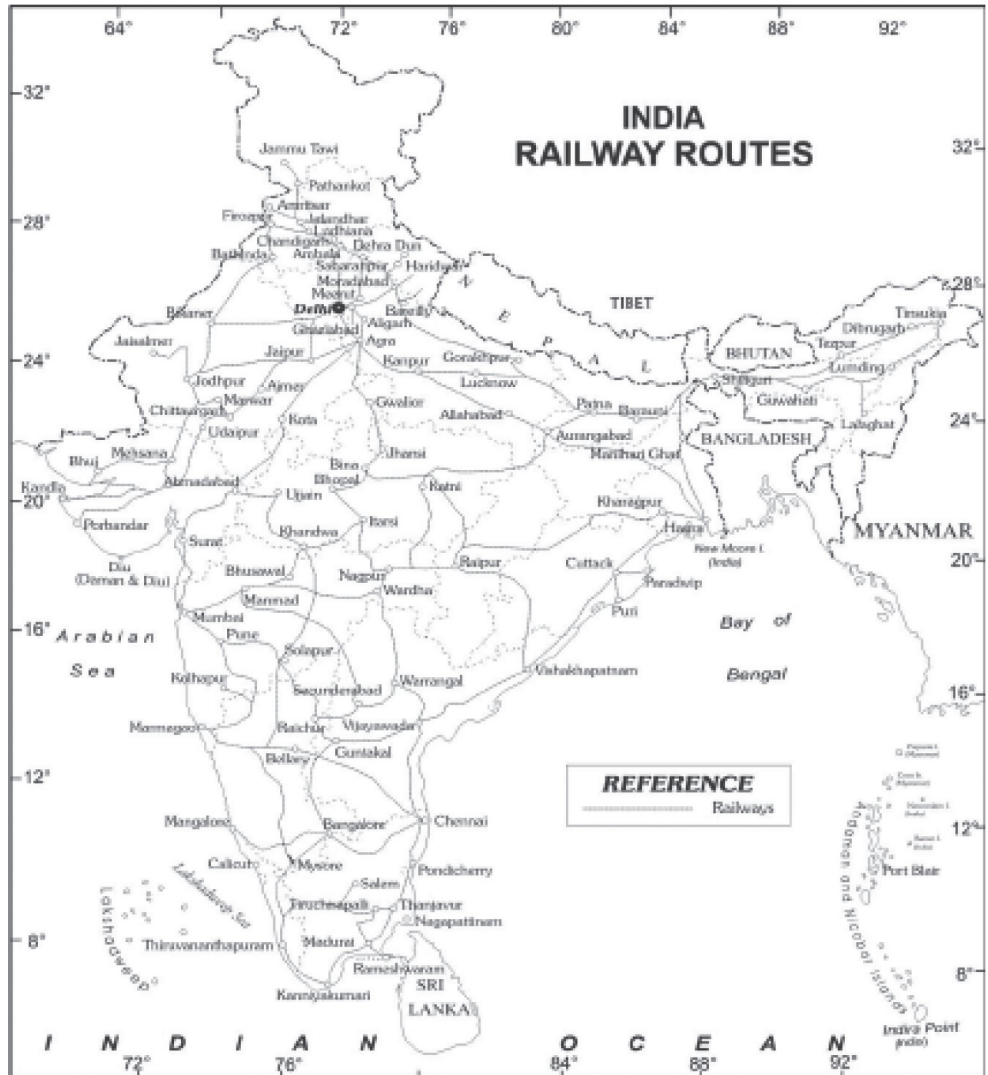
चित्र 4.9: राष्ट्रीय राजमार्ग



टिप्पणियाँ

**रेलमार्ग मानचित्र:** रेलमार्ग मानचित्र एक देश अथवा निकटस्थ देशों में बिछे रेल मार्गों के जाल को बेहतर तरीके से दर्शाता है। इस प्रकार के मानचित्रों में हमें सूचना मिलती है:

- किसी क्षेत्र विशेष में पाये जाने वाले रेलमार्ग की दो पटरियों की बीच की चौड़ाई,
- उन रेल मार्गों की लम्बाई,
- चलाए जा रहे इंजिन के प्रकार जैसे इलेक्ट्रिक अथवा डीजल,
- पटरियों के स्वभाव एवं प्रकार जैसे एकल, दोहरी, गेज के बदलाव की प्रक्रिया में अथवा निर्माणाधीन।



चित्र 4.10: रेलमार्ग मानचित्र

पर्यटक रेलवे मानचित्र का अध्ययन करने से ही गंतव्य स्थान की यात्रा की योजना बना सकता है। यह उनके गंतव्य स्थान रेल मार्ग और ट्रेन की उपलब्धता की जानकारी देने में सहायक होता है। कभी-कभी यह भी होता है कि पर्यटन स्थल सीधे रेल से जुड़ा नहीं होता है। वहाँ पहुँचने

## यात्रा और पर्यटन : भूगोल के मौलिक तत्व

के लिए सड़क मार्ग भी होता है। पर्यटक लम्बी दूरी रेलमार्ग से तय कर लेता है तथा छोटी दूरी सड़क मार्ग से तय करता है। उदाहरण के लिए मुंबई से जम्मू व कश्मीर घाटी जाने वाले पर्यटक जम्मू तक रेल मार्ग से और उसके बाद घाटी जाने के लिए बस से जाते हैं।

**हवाई मार्ग मानचित्र :** हवाई मार्ग मानचित्र प्रमुख एवं लघु राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय कार्यशील एयरपोर्ट और उनके मध्य उपलब्ध उड़ानों की जानकारी देता है। हवाई मार्ग मानचित्र पर्यटकों को उनके गंतव्य स्थानों के बीच छोटे हवाई मार्गों के बारे में जानकारी के लिए बहुत सहायक होती है।

**पर्यटक मानचित्र :** पर्यटक मानचित्र पर्यटकों के लिए उनकी जरूरतों और आवश्यकताओं के अनुसार निश्चित ही बहुत महत्वपूर्ण है। इस प्रकार के मानचित्रों को पर्यटकों की रूचि जैसे प्राकृतिक सौन्दर्य के स्थानों, पहाड़ी केन्द्रों, स्मारकों, धार्मिक स्थानों, समुद्र तटों, वन्य जीव अभ्यारण्य, पार्कों, ऐतिहासिक महत्व के स्थानों, सांस्कृतिक स्थलों, ट्रेकिंग मार्गों और पर्वतारोहण एवं अन्य अनेक पर्यटन गंतव्यों को ध्यान में रखकर तैयार किया जाता है। इस प्रकार के मानचित्र में अन्य विशेषताएँ जैसे नदियों, झीलों, महासागरों, पर्वतों, पहाड़ों जंगलों इत्यादि स्थानों को भी दर्शाया जाता है। यद्यपि

## माड्यूल - 1

पर्यटन के आधार



टिप्पणियाँ



चित्र 4.11: पर्यटक मानचित्र

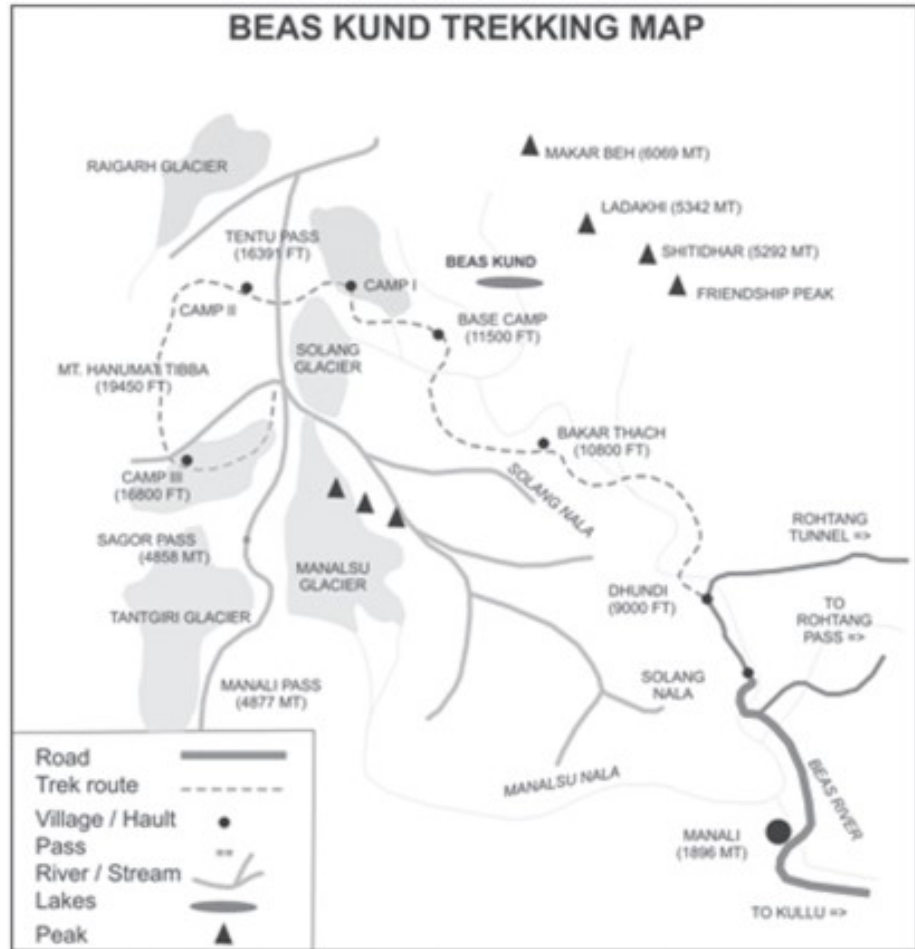




टिप्पणियाँ

ये सूचनाएँ अनेकों मानचित्रों में दिखाया जा सकता है, तथापि सामान्यतया इसे पर्यटकों के लिए एक मानचित्र में प्रदर्शित किया जाता है। इससे पर्यटक अपने गंतव्य स्थान की एक समाकलित तस्वीर प्राप्त कर पाते हैं। इन पर्यटक मानचित्रों को राष्ट्रीय से स्थानीय स्तर पर तैयार किया जाता है, जैसे, भारत, दिल्ली, आगरा अथवा मुम्बई के मानचित्र। चित्र 4.11 पर भारत में स्थिति विभिन्न पर्यटक केन्द्रों को दर्शाया गया है। किसी राज्य का पर्यटन सूचना केन्द्र पर्यटक मानचित्र को विस्तार से दिखाता है।

**ट्रेकिंग मार्ग मानचित्र:** ट्रेकिंग मार्ग मानचित्र पर्वतीय क्षेत्र में सम्भावित ट्रेकिंग मार्ग दिखाता है। जो पर्यटक प्रकृति में रोमांच एवं साहसपूर्ण कार्य करने में रूचि रखते हैं वे ट्रेकिंग पर जाना पसंद करते हैं। उनके लिए यह मानचित्र बहुत सहायक होता है। इस मानचित्र पर ट्रेकिंग मार्ग, मार्ग में विभिन्न स्थानों की ऊंचाई, कैम्प स्थल के साथ-साथ नदी व पर्वत श्रेणी की जानकारी भी होती है।



चित्र 4.12: ट्रेकिंग मार्ग मानचित्र



## क्रियाकलाप 4.2

आप दिल्ली से कश्मीर के डल झील जाना चाहते हैं। एक मानचित्र लीजिए और उसमें सभी प्रकार के संबंधित एवं आवश्यक सूचनाएँ जैसे स्थिति, स्थलीय और हवाई मार्ग का जुड़ाव, दूरी इत्यादि एकत्रित करें।



टिप्पणियाँ

### 4.6.4 मानचित्र को कैसे पढ़ा जाए

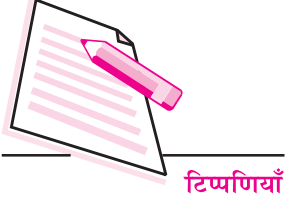
मानचित्र पर्यटकों के लिए बहुत उपयोगी होते हैं। गंतव्य स्थान पर पहुँचने से पहले वे उन जगहों से अवगत हो जाते हैं। पर्यटक-गाइड और किताबें पर्यटकों में रूचि जागृत करने के लिए होते हैं। इसलिए कभी-कभी गाइड और किताबें पर्यटकों को गंतव्य स्थान पर जाने की प्रेरणा देने के माध्यम होते हैं। मानचित्र प्रत्येक प्रकार की सूचना जैसे स्थलाकृति, तापमान, वर्षा, अपवाह, दूरी, मार्ग, जाने का उपयुक्त समय और भी अन्य जानकारियाँ देता है। मानचित्र को ठीक से समझने के लिए पर्यटकों को दर्शनीय स्थलों के अक्षांशों और देशांशों की अच्छी जानकारी होनी चाहिए। मानचित्र पर दिया गया मापक एक स्थान से दूसरे स्थान की दूरी के आकलन के लिए बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार एक स्थान के संदर्भ में दूसरे स्थान की स्थिति जानने के लिए दिशा का ज्ञान होना भी आवश्यक है। मानचित्र को देखकर दिशा पता की जा सकती है। यदि दिशा न दी गई हो तो मानचित्र में दिखाए गए अक्षांश और देशांश रेखाओं की सहायता से दिशा की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। मानचित्र पर विभिन्न प्रकार की सूचनाएँ दी गई होती हैं। इन्हें मानचित्र के नीचे दी गई सूचनाओं को पढ़कर आसानी से समझा जा सकता है। किसी तथ्य के वितरण को समझने के लिए मानचित्र पर दर्शाये गये स्थानिक प्रतिरूप को देखना चाहिए।

### 4.6.5 चार्टों के प्रकार

संख्यात्मक सूचना को दृश्य प्रस्तुति के माध्यम से बेहतर समझा जा सकता है। इससे आंकड़ों को आसानी से समझने, तुलना करने और निष्कर्ष निकालने में आसानी होती है। इन आंकड़ों को प्रस्तुत करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण पद्धतियाँ जैसे दंडारेख, पाई चार्ट, लाइन चार्ट, प्रकीर्ण आरेख, आयत चित्र और प्रवाह चित्र चार्ट हैं।

**दंडारेख चार्ट** : दंडारेख सूचना का एक त्रिभुज द्वय आयामी प्रस्तुतीकरण है। जानकारियों की तुलना करने के लिए दंडारेख तैयार करके एक नजर में अध्ययन करने का यह सामान्य तरीका है। अंकीय आंकड़ों को भिन्न-भिन्न समूहों में वर्गीकृत करके अध्ययन करना बहुत प्रभावी होता है। उदाहरणार्थ विभिन्न पर्यटक केन्द्रों पर आने वाले पर्यटकों की संख्या ज्ञात हो तो उचित श्रेणी का चयन कर विभिन्न केन्द्रों का बार तैयार किया जा सकता है। आंकड़ों को प्लॉट करने के बाद तुलनात्मक दृष्टिकोण से निष्कर्ष निकाला जाता है। बार एकल अथवा अनेक हो सकते हैं। उन्हें मानचित्र अथवा अलग कागज या ग्राफ पर बनाया जा सकता है।

**लाइन चार्ट** : एक निश्चित समयावधि में किसी तथ्य की प्रवृत्ति के अध्ययन के लिए लाइन चार्ट को प्रयोग में लाया जाता है। लाइन चार्ट अलग-अलग आंकड़ा बिन्दुओं को जोड़ता है। यह एक समयावधि में आंकड़ों के विभिन्न मानों को समझने एवं निष्कर्ष निकालने के लिए बहुत



टिप्पणियाँ

ही आसान व स्पष्ट तरीका है। उदाहरणार्थ यदि किसी पर्यटक केंद्र पर विभिन्न वर्षों में आने वाले पर्यटकों की संख्या उपलब्ध हो तो उन्हें विभिन्न वर्षों के आधार पर अंकित किया जा सकता है। इस प्रकार अंकित करने के पश्चात एक समयावधि के दौरान पर्यटकों की संख्या में होने वाली वृद्धि अथवा कमी अथवा अचानक बदलाव के क्रमों का चित्रण मिल जाता है।

**पाई चार्ट :** पाई चार्ट अलग-अलग क्षेत्रों द्वारा गठित मूल्यों के अनुपातिक अंश का प्रतिनिधित्व करता है। इस विधि में सभी मानों को एक साथ जोड़ कर 100% माना जाता है जिसके लिए एक वृत्त बनाया जाता है। विभिन्न क्षेत्रों के मान के आधार पर उस वृत्त को विभिन्न भागों में बांटा जाता है। उदाहरणार्थ यदि पर्यटकों को विभिन्न वर्गों में जैसे धर्म, आम समूह, उनके मूल स्थान इत्यादि में विभाजित किया जाए और उनकी संख्या उपलब्ध हो तो पर्यटकों की क्षेत्रवार संख्या के आधार पर पाई चार्ट आसानी से तैयार किया जा सकता है।



### क्रियाकलाप 4.3

पिछले 10 वर्षों में आपके राज्य में यात्रा करने आए विदेशी पर्यटकों के आगमन के आंकड़े प्राप्त कीजिए। एक बार चार्ट पर प्रत्येक वर्ष के आंकड़ों को दंडारेख द्वारा प्रदर्शित कीजिए।



### पाठगत प्रश्न 4.3

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

1. मानचित्र की दो मुख्य श्रेणियाँ क्या हैं?
2. विषयगत मानचित्र का वर्णन कीजिए।
3. एक विदेशी पर्यटक भारत में विभिन्न पर्यटक स्थलों की यात्रा करना चाहता है। इसके लिए आप उन्हें किस मानचित्र के लिए सुझाव देंगे?
4. ट्रेकिंग मार्ग मानचित्र की क्या विशेषताएँ हैं?



### आपने क्या सीखा

- यात्रा और पर्यटन के लिए भूगोल बहुत ही महत्वपूर्ण एवं केन्द्रीय विषय है जो विभिन्न भागों को जोड़ता है। यह किसी भी स्थान को गहराई से समझने के लिए अच्छी जानकारी देता है। यह पर्यटन उद्योग की वृद्धि और विकास में बहुत योगदान देता है।
- पर्यटन एक प्रकार की यात्रा है। इसका मुख्य उद्देश्य फुरसत में मनोरंजन, पुनर्युवन अथवा व्यस्त कार्यों से अलग होकर आनंदपूर्वक समय व्यतित करना है।

## यात्रा और पर्यटन : भूगोल के मौलिक तत्व

- यात्रा व पर्यटन भूगोल उन भौगोलिक पहलुओं की जानकारी देता है जिनसे पर्यटन की संभावनाएँ बढ़ती हैं। यह विधा पर्यटक की सहायता के लिए अनेक प्रकार की सूचनाएँ प्रदान करता है। इससे पर्यटन में वृद्धि होती है।
- अक्षांश व देशांश रेखाएँ हमें पृथ्वी पर किसी स्थान की स्थिति के बारे में पता लगाने में सहायता करती हैं। इसके अलावा हम जलवायु व विभिन्न समय क्षेत्रों को भी समझ सकते हैं। ग्लोब पर समय का निर्धारण पर्यटक के लिए अति आवश्यक होता है।
- हमारे देश का मानक समय इसके मध्य से गुजरने वाली देशांतर के आधार पर निर्धारित होता है। इस देशांतर का मान ग्रीनविच से  $82^{\circ} 30'$  पूर्व है। इसीलिए भारत का समय अंतरराष्ट्रीय मानक समय अथवा ग्रीनविच समय से 5 घंटे 30 मिनट अधिक आगे है।
- भूगोल में मानचित्र तैयार करना और उनका अध्ययन करना बहुत महत्वपूर्ण है। मानचित्रों को मोटे तौर पर दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया गया है:
  - (i) सामान्य संदर्भ मानचित्र और
  - (ii) विशेष अथवा विषयगत मानचित्र
- सामान्य संदर्भ मानचित्र किसी स्थानिक इकाई जैसे महाद्वीपों, देशों, जिलों, शहरों, नदियों, पर्वतों, पठारों इत्यादि की सूचनाएँ देते हैं। लेकिन विशेष अथवा विषयपरक मानचित्रों पर पर्यटकों के लिए महत्वपूर्ण वनस्पतियों, वर्षा, तापमान, खनिज उद्योग, सड़कें, रेल मार्गों, वायु मार्गों इत्यादि को दर्शाया जाता है।



### पाठांत प्रश्न

1. पर्यटन के विकास में भूगोल की समझ कैसे सहायक होती है?
2. अक्षांश और देशांतर के मध्य अंतर स्पष्ट कीजिए।
3. विशेष या विषयगत मानचित्र क्या है? किन्हीं चार विषयगत मानचित्रों की व्याख्या कीजिए।
4. अंतरराष्ट्रीय तिथि रेखा को परिभाषित कीजिए।
5. भौगोलिक समय अन्तराल की व्याख्या कीजिए।
6. दंडारेख और पाई चार्ट के मध्य अन्तर स्पष्ट कीजिए।



### पाठगत प्रश्नों के उत्तर

#### 4.1

#### (क)

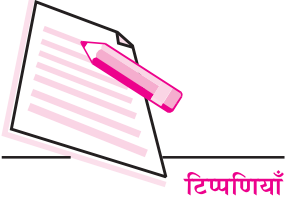
1. भूमध्य रेखा
2. गोलाद्ध
3. ग्रीनविच
4. उत्तरी

## माड्यूल - 1

### पर्यटन के आधार



### टिप्पणियाँ



(ख)

1. पर्यटन आयाम जैसे यात्रा, दूरी, परिवहन, मूल स्थान से पर्यटन स्थल के बीच समय अंतराल स्थान की स्थिति, वर्तमान पर्यावरणीय स्थितियों आदि का भौगोलिक विश्लेषण समझा जा सकता है।
2. अक्षांश - किसी भी स्थान की कोणीय दूरी जो पृथ्वी के केन्द्र पर भूमध्यरेखीय तल से उत्तर या दक्षिण में मापी जाती है।  
देशांश - कोणीय दूरी जो पृथ्वी की धुरी के साथ-साथ प्रधान मध्याह्न रेखीय तल तथा उस स्थान के समांतरीय तल के बीच बनती है।
3. - पृथ्वी के धरातल पर किसी स्थान को दर्शाने हेतु  
- ग्लोब पर समय निर्धारण के लिए देशांतर की समझ आवश्यक है।  
- अक्षांश की जानकारी से पृथ्वी के किसी स्थान की जलवायु की सूचना पाने में मदद मिलती है।

4.2

1. अंतरराष्ट्रीय समय रेखा पृथ्वी के सतह पर एक काल्पनिक रेखा है जो उत्तर से दक्षिण की ओर आती है और दोनों तरफ एक कलैण्डर दिन को अलग करती है।
2. दिल्ली और लंदन के मध्य समय अंतराल 5 घंटे 30 मिनट है क्योंकि कुल देशांश के अन्तर  $82^{\circ} 30'$  है। लंदन ( $0^{\circ}$ ) प्रधान मध्याह्न रेखा पर है और इलाहाबाद का समय  $82^{\circ} 30'$  पूर्व से निर्धारित होता है।
3. यदि व्यक्ति अंतरराष्ट्रीय समय रेखा को पूर्व से पश्चिम की ओर पार करता है तो उसे अपनी घड़ी में एक दिन (24 घंटे) का समय जोड़ना पड़ता है। जब वह पश्चिम से पूर्व की ओर पार करता है तो वह अपनी घड़ी में एक दिन (24 घंटे) कम कर देता है।

4.3

1. (a) सामान्य संदर्भ मानचित्र  
(b) विशेष अथवा विषयक मानचित्र
2. विषयक मानचित्र जलवायु, वनस्पति, वर्षा, तापमान खनिजों, उद्योगों, सड़कों, रेल मार्गों, हवाई मार्गों इत्यादि की सामान्य जानकारी देता है।
3. भारत के पर्यटक मानचित्र एवं परिवहन मानचित्र।
4. ट्रेकिंग मार्ग मानचित्र पर्वतीय क्षेत्र में संभावित ट्रेकिंग मार्ग दिखाता है। यह ट्रेकिंग मार्ग, मार्ग में विभिन्न स्थानों की ऊंचाई, कैम्प स्थल के साथ-साथ नदी व पर्वत श्रेणी की जानकारी भी दिखाता है।